कोवलम, तमिलनाडु के तटीय क्षेत्रों में उपलब्ध सुरमई मछली के मत्स्यन स्थल का जिओस्पेशियल नक्शा

शोभा जो किज़ाकूडन[1], इंदिरा दिविपाला[1], जो के. किज़ाकूडन[1], ए.पी. दिनेशबाबू[2], के. एस. एस. एम. यूसफ[1], के.एस. गुप्ता[1] और बी. जास्पर[1]

[1]केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का मद्रास अनुसंधान केंद्र, चेन्नई, तमिलनाडु

[1]केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का माँगलूर अनुसंधान केंद्र, कर्नाटक

लेखक से संपर्कः jkshoba@gmail.com

परिचय

स्कोम्ब्रिड़े परिवार में स्कोम्ब्रोमोरस और एकांतोसिबियम की वंश में शामिल मछलियों को सामान्यतः 'सुरमई' के नाम से मशूर है। सुरमई मछलियाँ बहुत स्वादिष्ट होते हैं और दुनिया भर में इनके अत्यधिक मूल्य हैं। इन मछलियों के लिए मांग लगातार बढ़ती रही है। इनकी उच्च निर्यात मूल्य और घरेलू बाजार में उच्च बिक्री मूल्य के कारण मछुवारे इसके संसाधन की लक्षित मत्स्यन करते हैं। भारत में यह मात्स्यिकी कई दशक पहले परंपरागत मछुआरों का वर्चस्व था जो तटवर्ती पानी में 25-60 मी. की एकमात्र गहराई पर देशी नौकाओं और मध्यम आकार की नावों से स्वदेशी गियर की संचालन से सुरमई मछलियाँ पकड़ते थे। परंतु यह अब उपतट ीय और गहरी सागर में 50-300 मी. की गहराई में संचालन करनेवाला ट्रॉलर द्वारा शोषण किया जाता है।

आज, एक ओर से मछली पकड़ने के संचालन में वृद्धि हो रही है और दूसरी ओर से पकड़ में कमी हो रही है। एसी स्थिती में उत्पादक मत्स्यन के मैदान की पहचान एक जरूरत बन चुकी है। दीर्घकालिक आधार पर विवेकपूर्ण तरीके से शोषण करने हेतु मौसम के लिहाज संसाधन विशिष्ट मैदानों को निर्धारित करने के लिए जीयोस्पेशियल अथवा भू-स्थानिक मानचित्रण तकनीक मछुआरों के लिए बहुत मददगार साबित हुई है।

डेटा संग्रह

सी. एम. एफ. आर. आई द्वारा भारत के तटीय क्षेत्र के समुद्री मछली संसाधन का जियोस्पेशियल वितरण में अन्तर्दृष्टि हासिल करने का प्रयास हो रहा है। इस वर्तमान अनुच्छेद में कोवलम, तमिलनाडु के तटीय क्षेत्र में सुरमई मछली पकड़ने के मैदानों की एक भू-स्थानिक

कोवलम के पाँच मछुवारे सुरुमई मत्स्यन के मैदानों का विवरण हासिल करने में मदद किए

मानचित्रण (जियोस्पेशियल नक्षा) का विवरण किया गया है। इस अध्ययन के लिए आवश्यक जानकारी प्राप्त करने में कोवलम के पांच मछुआरों ने मदद की है। यहाँ प्रस्तुत जानकारी एक वर्ष की अवधि में एकत्र अक्षांश देशांतर और गहराई समोच्च विवरण पर आधारित है।

टिप्पणी

कोवलम क्षेत्र में, सुरुमई मछली मुख्य रूप से काँटे और लाइनों द्वारा पकड़े जाते हैं जो यहाँ 'तूंडिल लाईन' कहा जाता है। इसके अलावा यह गिल जाल से भी पकड़ा जाता है। कोवलम के उत्तर में पनयूर से दक्षिण में महाबलिपुरम तक की गई मत्स्यन का विवरण से यह पता चला है कि पाँच एसे क्षेत्र हैं जहाँ सुरुमई मछलियों का मत्स्यन लगातार होता है। इन क्षेत्रों का विवरण नीचे दिया गया है।

जनवरी-अप्रैल के महीनों में अधिकतम वयस्क मछलियाँ लगभग 60' (18.29 मी.) से लेकर 215' (65.55 मी.) के गहराई से पकड़े जाते

क्षेत्र का नाम	अक्षांश लंबी विवरण	उपलब्धता के महीने
पनयूर कल	N 12^0 53.190, E 80^0 17.900 to N 12^0 51.200, E 80^0 17.450	जनवरी और अगस्त
सांचा पार	N 12^0 48.100, E 80^0 18.350 to N 12^0 48.100, E 80^0 17.250	जुलाई
मादै	N 12^0 48.138, E 80^0 18.700 to N 12^0 48.200, E 80^0 18.800	जूलाई और अगस्त
पनाई कल	N 12^0 46.500, E 80^0 16.250 to N 12^0 46.800, E 80^0 16.800	जनवरी
मेला कल	N 12^0 46.450, E 80^0 16.950 to N 12^0 47.300, E 80^0 17.250	जुलाई और अगस्त
पटिपुलम कल	N 12^0 40.600, E 80^0 14.900 to N 12v 41.100, E 80^0 15.200	जनवरी

हैं। उप वयस्क मछलियाँ जुलाई और अगस्त के महीनों में प्रचुर संख्या में पकड़े जाते हैं। मत्स्यन क्षेत्र क्रमशः कोवलम तट से 7 से 14 कि. मी. उत्तर-दक्षिण दिशा में और 10 से 12 कि. मी. पूर्व दिशा में है. उत्तर के क्षेत्र का गहराई 30-33 मी. और पूर्व दिशा में लगभग 22 मी. है। संसाधन की भू-स्थानिक मानचित्रण से उप वयस्कों की उपलब्धता को दर्शाया गया है। यह क्षेत्र अक्षांश $12^0 47' 300$ N - $12^0 48' 400$ N और देशान्तर $80^0 17' 250$ - $80^0 18' 800$ बीच आता है।

कोवलम के तटीय क्षेत्रों में उपलब्ध उप्वयस्क सुश्मई मछली के मत्स्यन स्थल का जिओस्पेशियल नक्षा

निष्कर्ष

समुद्री मात्स्यिकी दुनिया के आबादी के लिए पशु प्रोटीन का एक अच्छा और किफायती स्रोत है। भविष्य की पीढ़ियों के लिए इस संपत्ति की अनुपलब्धता का खतरा है। संसाधनों के जियोस्पेशियल नक्षा के आधार हमारे जलीय धन की शोषण की स्थिति और प्रबन्ध नीतिगत विकल्पों का सूत्रीकरण किया जा सकता है। हमारे इस सागर संपत्ति के प्रतीक सार्वजनिक जागरूकता कार्यक्रम को व्यवस्थित करने का यह एक अच्छा उपकरण बनेगा। इसके दरिये इन संसाधनों का स्थायी शोषण के लिए नीतियां बना जा सकता है।